मादा पशु एवं प्रसूति रोग विभाग
लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार
(हरियाणा) 125004

आज़ादी का अमृत महोत्सव

पशुओं के गर्मी में ना आने की समस्या

भैंस या झोटी में नए दूध न होना एक मुख्य समस्या है। इसके लिए कई कारण हो सकते हैं जैसेः–

1. शरीर में खनिज व लवणों की कमी: इस विश्वविद्यालय द्वारा करवाए गए सर्वे में यह ज्ञात हुआ है कि हमारी जमीन में कई खनिजों की कमी हो गई है अतः ऐसी जमीन पर उगाया गया चारा भी खनिज व अन्य लवणों की कमी वाला होता है। इस अवस्था में यह पाया गया है कि पशुओं में फास्फोरस खनिज की कमी अति महत्व रखती हैं जिसके कारण पशु के अण्डाशय पर अण्डा ठीक प्रकार से विकसित नहीं होता है। इसका परिणाम यह होता है कि झोटी 4 या 5 वर्ष की होने पर भी नई दूध के लक्षण नहीं दिखाती है।

2. पशु के शरीर का वजन कम होना: पशुओं में प्रजनन के लिए शरीर का वजन 250 कि. व 300 किलोग्राम के बीच होना चाहिए। जिन पशुओं का वजन कम होता है वे या तो गर्मी के लक्षण कम दिखाती हैं या गर्भ धारण नहीं करती हैं। कम वजन होने से पशु की उम्र तो बढ़ती रहती है लेकिन गर्मी के लक्षण (अण्डा पूरा न बनने के कारण), कम आते हैं।

3. पशु के शरीर में रोग होने से हारमोनों की मंद क्रिया: जिन पशुओं के शरीर में यदि कोई रोग होता है तो उसका असर प्रजनन के लिए पैदा होने वाले हारमोनों पर होता है। ये हारमोन कम मात्रा में उपलब्ध होते है जिस कारण पशु पूर्ण रूप से गर्मी के लक्षण नहीं दिखाता है।

4. **पशु के रख -रखाव में कमी:** यह देखा गया है कि जिन पशुओं को गर्मी के दिनों में कई बार नहलाया जाता है तथा ठंडी जगह पर रखा जाता है, वे पशु गर्मियों में भी नए दूध हो जाते हैं। लेकिन जो पशु धूप में बंधे रहते हैं, जिनको ठण्डा वातावरण नहीं मिलता है वे गर्मी के मंद लक्षण दिखाते हैं। जिससे पशु नए दूध नहीं हो पाता है।

5. **पशु पालक को गर्मी के लक्षणों की कम जानकारी होना:** पशु पालक को यदि गर्मी के लक्षणों का ज्ञान ठीक न हो तो इस कारण भी पशु गर्भ धारण करने से वंचित रह जाता है, जैसे कि कई पशु पालक अपने पशु को झोटे के पास नहीं ले जाते हैं क्योंकि उनका विश्वास यह होता है कि पशु को रम्भाना चाहिए। लेकिन पशु के गर्मी में आने के कई अन्य लक्षण होते हैं जैसे पशु का बार–बार पेशाब करना, योनि पर हल्की सूजन, पूंछ पर चिकना पदार्थ लगना (तार या बालवे देना) इत्यादि। यदि पशु इनमें से कोई भी लक्षण दिखाए तो उस भैंस को ठण्डे वातावरण के समय झोटे को दिखाएं।

बचाव व उपचार: पशु को नियमित रूप से खनिज मिश्रण दें। झोटी को अच्छी खुराक दें ताकि उसका वजन 250 कि. ग्रा. से अधिक हो। गर्मी के लक्षणों की पूर्ण जानकारी रखें। अतः जब भी पशु गर्मी के जो भी लक्षण दिखाए तो उसे ठण्ड के समय झोटे को दिखाये। पशु में गर्मी के लक्षण, सुबह दोपहर व शाम के समय देखें। पशु के पेट में कीड़े न होने दें।

ध्यान रखने योग्य कुछ बातें: नए दूध होने के समय पशु का वजन बढ़ने की ओर होना चाहिए। घटते वजन वाले पशु गर्भ धारण नहीं कर पाते हैं। अधिकतर भैंसें तार (बाल्वे) ठण्डे मौसम के समय (रात व सवेरे) देती हैं। दिन के समय तार कम दिखाई पड़ते हैं। भैंसों में नए दूध होते समय रंभाना ही पक्का लक्षण नहीं होता। तार देने से भी भैंस नए दूध करवाई जा सकती है। कुछ संकर नस्ल के पशुओं में नए दूध होने के एक या दो दिन बाद हल्का खून आता है इसका गर्भधारण करने या न करने से कोई संबंध नहीं है।कुछ पशु गाभिन ठहरने के बाद भी गर्मी के लक्षण दिखाते हैं, ऐसे पशु की डॉक्टर से जांच कराएं।